

॥ जय नंदी बाबा ॥

॥ श्री करनला ॥

॥ जय गोमाता ॥

॥ सेवा ॥

॥ सुरक्षा ॥

॥ सम्मान ॥

# उद्घोषणा पत्रक



## गौ सम्मान आह्वान अभियान



All Social Media Address

Gau samman aahvaan abhiyaan

# आइये.....आज हम गौमाता पर चर्चा करते हैं।

यदि हम विविध स्रोतों से प्राप्त समाचारों पर सावधानीपूर्वक विचार करे, तो विषय सामने आता है कि भारत में प्राकृतिक रूप से प्रतिदिन गोलोक पधारने के अलावा लगभग 80,000 गोवंश प्रतिदिन अकाल मृत्यु से संसार छोड़ रहा है, जिनमें कुछ गौवंश पाँतीथिन खाकर के, कुछ भुख से, कुछ दुर्घटना से और शेष कसाई की छूटी से प्रतिदिन भारत में प्राण त्याग देता है। अनेकों गोवंश सड़कों पर निराश्रित विचरण कर रहे हैं। वर्तमान समय में गौमाता की न तो उचित सेवा हो पारही है, न पूर्ण सुरक्षा हो रही है और नाहीं उचित सम्मान प्राप्त हो रहा है। गाय की बात करने वाले को तो आजकल तो लोग प्रपंची मानकर उपहास करते दिखाई देते हैं।

**भारत में आजादी के आठ दशक (अठ्ठतर वर्ष) व्यतीत हो जाने के बाद भी ना तो भगवती गौमाता की उचित सेवा हो पाए ही है, ना सुरक्षा है, ना सम्मान है।**

सत्य तो यह है कि जिन 10/12 राज्यों में गोरक्षा के कानून बने हुए हैं, गोशालाओं को शासकीय, सामाजिक और आर्थिक सहायता मिलती है, अनुदान मिलता है, वहाँ पर भी गोमाता पूर्णरूप से सुरक्षित और सुखी नहीं है। तस्करी के माध्यम से अन्य प्रदेशों में ले जाकर वध कर दिया जाता है। अनेकों गोवंश निराश्रित अवस्था में विचरण करता दिखाई देता है, तो जिन राज्यों में गोरक्षा के लिये कोई कानून नहीं है, ना गोशालाओं को कोई आर्थिक सहायता सरकार प्रदान करती हैं, किसी भी प्रकार का अनुदान गोशालाओं को नहीं दिया जाता है, वहाँ की गोमाता कैसे सुरक्षित और सेवित हो सकती है?

**आजादी के 78 वर्ष बीत जाने के बाद भी अनेकों राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में निर्बाध गोवध हो रहा है, गो अपमानित हो रही है, निराश्रित विचरण कर रही है, असंरच्य गोवंश अत्यधिक दुःखी है।**





इन स्थितियों को देखते हुए देश के कुछ गो प्रेमी विचारवान संतों और गो सेवकों ने भगवान श्री कृष्ण जी की पावन लीला स्थली ब्रजभूमि में बैठ कर विचार किया कि अगर हम लोग अपने जीवनकाल में गायमाता की सेवा, सुरक्षा और सम्मान के लिए कोई सार्थक प्रयास नहीं करते हैं, तो हमें इतिहास माफ नहीं करेगा। गो रक्षा को लेकर हर युग में प्रयास हुआ है, तो इस 21वीं सदी में भी कुछ तो प्रयास होना ही चाहिए। ऐसी कोई सदी नहीं निकली, जिसमें गौमाता की सुरक्षा के लिए प्रयास नहीं किया हो..... कितने सफल हुए, कितने असफल हुए... यह बात अलग है, लेकिन प्रयास प्रत्येक सदी में हुए, तो 21वीं सदी में भी गोरक्षा-गोसेवा को लेकर ईमानदारी से कोई प्रयास तो होना ही चाहिए। संतों और गोभक्तों ने मिलकर के विचार किया कि कुछ तो करना ही चाहिए। बहुत मंथन करने के बाद सभी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मुट्ठीभर लोग अपने सामान्य प्रयासों से कुछ भी नहीं कर पाएंगे। थोड़े से लोग लाख कोशिश करके भी, करोड़ों प्रयास करके भी गायमाता की सुरक्षा नहीं कर पाएंगे। भाईयों और बहनों! वास्तव में नहीं कर पाएंगे क्योंकि वर्तमान समय में गोभक्तों की संख्या बहुत कम है। गोसेवक समाज लाख प्रयास करें, लेकिन यह संभव नहीं है की वह भारत के सभी गोवंश की संपूर्ण सेवा, सुरक्षा और सम्मान प्रदान कर सके। लेकिन हाँ! जो सेवा, सुरक्षा का कार्य हम लोग अत्यधिक परिश्रम और प्रयास करके भी नहीं कर सकते हैं, वह कार्य सरकार की एक कलम कर सकती है, जो कार्य हजार हाथ नहीं कर सकते हैं, वह कार्य सरकार के एक आदेश से हो सकता है। वर्तमान समय में गौमाता की सेवा सुरक्षा और सम्मान को अगर कोई सुनिश्चित कर सकता है, तो वह है सिर्फ भारत सरकार...

**भारत सरकार के अतिरिक्त और कोई यह कार्य नहीं कर सकता।  
तो क्या किया जाए..... सरकार को इस कार्य के लिये कैसे याजी किया जाए?  
कई बिंदुओं पर विचार करने के बाद निष्कर्ष यह निकला कि सरकार को  
मनाने के दो ही तरीके हैं**

**एक सरकार के विळद्ध आंदोलन.. और  
दूसरा है सरकार से प्रार्थना...**



आंदोलन की बात करें... तो आंदोलन इस समय सफल नहीं हो सकता है, क्योंकि गौमाता के लिए आंदोलन अधिकार का नहीं कर्तव्य का विषय है। आंदोलन अगर अधिकारों का हो, तो लोगों की भीड़ उमड़ जाती है, लेकिन जहाँ पर कर्तव्य की बात आती है, वहाँ से लोग पीछे हट जाते हैं, कोई भी कर्तव्य पालन करना नहीं चाहते हैं। इसलिए अगर हम आंदोलन की बात करें, तो मुट्ठीभर लोग इकट्ठा होंगे, जिससे सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ता है। वैसे भी स्वतंत्र भारत में 1966 से लेकर अब तक गोरक्षा को लेकर कई आंदोलन हुए, परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई। अतः आंदोलन का विचार करना ही पागलपन है, करना ही नहीं चाहिए, तो फिर क्या करें?

**अगर आंदोलन का विचार त्याग देते हैं, तो फिर एक ही दास्ता बचता है और वह है प्रार्थना... सभी गोभक्त हाथ जोड़कर सरकार से प्रार्थना करें।**



## **कौन सी सरकार ?**



**एक ऊपर वाली सरकार और एक नीचे वाली सरकार....**

दोनों सरकार से यदि सभी गो सेवक समानांतर प्रार्थना करें, तो निश्चित सफलता मिलेगी, क्योंकि महापुरुष कहते हैं की प्रार्थना में बहुत शक्ति होती हैं। निष्कामभाव से अथवा परमार्थ भाव से की गई प्रार्थना का सुफल अवश्य प्राप्त होता है।

इस विषय पर सभी गो प्रेमी, राष्ट्रप्रेमी संतो और सद्गृहस्थों ने विचार किया कि प्रार्थना का स्वरूप क्या होगा.. कैसा होगा.. कितने लोग और कितनी अवधि तक प्रार्थना करेंगे?

केवल 5-50 गो प्रेमी भाई बहन जाके एक-दो बार प्रार्थना करें, तो बात बन नहीं पाएंगी, लोकतंत्र में कम लोगों के द्वारा अल्प समय के लिए की गई प्रार्थना से बात नहीं बन सकती।

अतः विचार किया गया कि सामूहिक रूप से सभी भारतवासी भारत सरकार से गौसेवा, गोरक्षा और गो सम्मान हेतु प्रार्थना करें, देश के हर कोने-कोने से प्रार्थना हो, लंबी अवधि तक प्रार्थना हो, तब ही बात बन सकती है।





“इन सभी बातों पर बृज निवास के समय सभी गोसेवकों और गोप्रेमी संतों ने मिलकर निश्चय किया कि भारत में लगभग 5000 तहसील है, प्रत्येक तहसील क्षेत्र से 2000/3000 लोग तहसील मुख्यालय जाकर प्रधानमंत्री जी, राष्ट्रपति महोदया, राज्य के राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री जी के नाम तहसीलदार/SDM/ब्लॉक अधिकारी को आदरपूर्वक लिखा हुआ प्रार्थना पत्र प्रदान करें, जिसका भाव कुछ इस प्रकार हो कि ‘भारत में बहुत बड़ी संख्या में सनातनी/भारतीय विचारधारा के लोग रहते हैं और सब के सब गोवंश के प्रति आदर भाव रखते हैं और गो को अपनी माता मानते हैं, गोवंश हमारी आस्था का केंद्र है, हमारी भारतीय संस्कृति का मूल पोषक तत्व है, गोवंश विषमुक्त कृषि का मूल आधार है, भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है, गोमाता भारत के आरोग्य की मूल कुंजी है, गोहत्या केवल मात्र किसी प्राणी की हत्या नहीं, बल्कि हमारी आस्था की हत्या है। गोहत्या भारत के स्वास्थ, समृद्धि और संस्कृति की हत्या है। सत्य तो यह है कि गोहत्या राष्ट्रहत्या है, भारतहत्या है। भारत को ब्रिटिश दासता से स्वतंत्र हुए आठ दशक पूर्ण होने आए हैं और अभी तक भारत में गोवंश अत्यंत दुःखी है, असुरक्षित है। अब तो सम्पूर्ण भारत वर्ष में कानूनी रूप से गोहत्या पूर्णतः समाप्त होनी ही चाहिए। गोरक्षा की माँग किसी जाति, समाज अथवा वर्ग विशेष के निजी हितों की माँग नहीं है, अपितु सम्पूर्ण मानव जाति और जीव जगत के हित की माँग है, राष्ट्र और विश्व कल्याण की माँग है।”



इस प्रकार के प्रार्थना पत्र वैज्ञानिकों, विधि विशेषज्ञयों और विद्वानों के समूह द्वारा सामूहिक विचार कर उचित और विनयपूर्वक भाषा में लिखकर देश की 5000 तहसीलों (तालुका, ब्लॉक, प्रखंड) से एक साथ प्रत्येक राज्य के राज्यपाल महोदय, मुख्यमंत्री जी, माननीया राष्ट्रपति महोदया और भारत के प्रधानमंत्री जी को एक ही दिन, एक ही समय 5000 तहसीलदारों के माध्यम से, फैक्स, मेल और स्पीड पोस्ट के माध्यम से भेजा जाये। सभी 5000 तहसीलों से प्राप्त रिसीविंग कॉर्पी संग्रहित कर सत्यापित छाया प्रति की चार फ़ाइल बनाकर (हार्ड कॉर्पी) के रूप में सीधी प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री और राज्यपाल कार्यालय को सौंपी जाये। इस प्रकार से किसी भी राज्य अथवा केंद्र सरकार के विरुद्ध आंदोलन नहीं करते हुए आक्रोश नहीं दर्शाते हुए, सिर्फ विनयपूर्वक प्रार्थना की जाए, तो निश्चित गोसेवा, गोरक्षण को कैसे तैयार करें?

तो उसके लिए वास्तविक गो प्रेमी संतों ने आह्वान किया है कि भारत में लगभग 780 जिले हैं, यदि 108 गो सेवी संत और गोभक्त 2 वर्ष तक पूर्णकालिक निष्काम सेवा हेतु तैयार हो और 108 प्रचारकों में से प्रत्येक गो संत, गो भक्त 8-10 जिलों में गो सम्मान आह्वान अभियान के प्रचार प्रसार हेतु जिला और तहसील में काम करने वाले गो सेवक संतों और गो भक्तों को तैयार कर उन्हें कार्य योजना समझाकर कार्य में लगावे और स्वयं उस क्षेत्र पर अभियान विषयक निरक्षक की जिम्मेदारी ले ले और आठ-दस जिलों में धूम-धूम कर जिला स्तरीय सेवकों के साथ मिलकर उन जिलों की प्रत्येक तहसील तक जाकर समाज सेवी और धर्मप्रेमी भाई बहनों से हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि 'भाईयों बहनों! भारतवर्ष में आजादी के 79वां वर्ष चल रहा है, सब अरब सनातनी राष्ट्र प्रेमी भाई बहनों के रहते हुए भी भारत में गोवंश अत्यंत दुःखी है, भूख से, दुर्घटना से, पॉलीथिन से, परिवहन से और गो हत्यारों की छुरी से प्रतिदिन 80,000 से अधिक गोवंश अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। आप से अनुरोध है कि गौमाताके, गोवंश के सुख के लिए एक दिन के लिये एक-दो घंटे का समय निकालकर 27 अप्रैल 2026 को सुबह 11 बजे अपने ब्लॉक/तहसील/मंडल/सब डिविजन/उप जिला/अनुमंडल कार्यालय पहुँचकर वहाँ उपस्थित अन्य गो प्रेमी, राष्ट्र प्रेमी भाई बहनों के साथ मिलकर वहाँ के सक्षम अधिकारी को माननीया राष्ट्रपति महोदया, प्रधानमंत्री जी, माननीय राज्यपाल महोदय, मुख्यमंत्री जी के नाम गो सेवा, गो रक्षा, गो सम्मान हेतु बिना किसी हंगामे के बिना किसी नारेबाजी के शांतिपूर्ण तरीके से सामूहिक रूप से हस्ताक्षरित प्रार्थना पत्र सौंप देवे।

इस प्रकार सभी 108 गो सेवक/गो संत 780 जिला स्तरीय गो सेवक, 5000 तहसील स्तरीय गो सेवक मिलकर प्रयास करके 5/6 माह में प्रत्येक तहसील से औसत 1-1 हजार गो सेवकों को प्रत्येक तहसील/ब्लॉक/मंडल/सब डिविजन/उप जिला/अनुमंडल पर गो सेवा, गो रक्षा, गो सम्मान हेतु प्रार्थना पत्र देने के लिए तैयार करें। इस प्रकार से पूरे देश में प्रार्थना पत्र देने वाले गो सेवकों गो संतों की संख्या लगभग 50 लाख हो जाएगी। 27 अप्रैल 2026 को, जिस दिन कोई सरकारी छुट्टी (राजकीय अवकाश) भी नहीं है, कोई त्यौहार भी नहीं है और कोई विवाह लग्न भी नहीं है, उस दिन सभी गो सेवक, गो संत मिलकर अपने-अपने तहसील मुख्यालय जाकर लिखित प्रार्थना पत्र तहसीलदार/ब्लॉक अधिकारी को आगे माननीय राष्ट्रपति महोदया, प्रधानमंत्री जी, राज्य के माननीय राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री जी को प्रेषित करने हेतु प्रदान करें।



प्रमाणित रिसीविंग प्रतिलिपि लेकर उसकी छाया प्रति रजिस्टर्ड डाक से उक्त चारों महानुभावों को भेजे साथ ही साथ उनके सचिव महोदय को फेक्स और मेल भी सभी 5000 तहसीलों के माध्यम से भेजे सभी 5000 तहसीलों से चार-चार प्रति संश्लिष्ट कर सत्यापित प्रतिलिपि व्यक्तिगत रूप से माननीय राष्ट्रपति महोदया, प्रधानमंत्री जी, राज्य के माननीय राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री जी, इन चारों के कार्यालय जाकर सभी प्रतिलिपियां इनको व्यक्तिगत अथवा इनके मुख्य/निजी सचिव को सौंप दी जाये। इस प्रकार 5000 तहसीलों से 50/60 लाख गोभक्तों के द्वारा एक ही तिथि 27 अप्रैल 2026 को दोपहर 11 से 12 बजे के बीच एक साथ गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान की शांतिपूर्ण माँग उठेगी, तो सरकार निश्चित इस कार्य को करने का मन बना ही लेगी। सरकार विचार करेगी कि देश का कोना-कोना जाग गया है और गो रक्षा की शांतिपूर्ण माँग कर रहा हैं, तो अब हमें यह कार्य करना ही है।

### 3 महीने तक प्रार्थना पत्र के दर्शिता समूह (वैज्ञानिक, विधि विशेषज्ञ और विद्वान)

सरकार से संवाद बनाये दखते हुए सरकार के संशयों को दूरकर

समाधानपटक युक्ति बताए और प्रार्थना जारी रखें।

अगर सरकार द्वारा 3 महीने में गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान विषय पर गंभीरता नहीं दिखाई जाए, गोहित, मानवहित, प्राणीहित, राष्ट्रहित और विश्वहित परक बात नहीं सुनी जाए, तो पुनः जिला और तहसील स्तरीय गो सम्मान आह्वान अभियान के कार्यकर्ताओं संतों और गो सेवकों का सहयोग लेते हुए देश के करीब 780 जिला केन्द्रों पर 5-5 हजार गो सेवकों को साथ लेकर, जिला कलेक्टर के पास जाकर के सभी तहसीलों के गो प्रेमी कार्यकर्ता, गो प्रेमी संत, मिलकर जिला कलेक्टर के माध्यम से पुनः सरकार को (माननीय राष्ट्रपति महोदया, प्रधानमंत्री जी, राज्य के माननीय राज्यपाल महोदय और मुख्यमंत्री जी को) याद दिलाए कि हम सब ने आपको तीन महीने पहले 5000 तहसीलों के माध्यम से गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान हेतु प्रार्थना की थी, लेकिन शायद आपको इस विषय पर विचार करने का समय नहीं मिला अथवा आप विस्मृत हो गए। अतः हम दोबारा 780 जिला केन्द्रों के जिला कलेक्टर के माध्यम से आपसे प्रार्थना करते हैं कि हम सभी राष्ट्र प्रेमी, गो प्रेमी सात्त्विक और निष्काम भाव वाले देशवासियों की बात सुनी जाए और गो हत्या पर सदा-सदा के लिए आपके राज्य/संपूर्ण भारतवर्ष में प्रतिबंध लगाया जाये। गायमाता को राष्ट्रमाता के पद पर विराजित किया जाए, गौ माता की सेवा और सुरक्षा लिए के संपूर्ण देश में (कश्मीर से कन्याकुमारी और कोहिमा से कांडला तक) एक समान केंद्रीय गो रक्षा, गो सेवा का कानून बने। तीन महीने का समय पुनः वैज्ञानिकों, विधि विशेषज्ञों और विद्वानों के साथ बैठकर समाधान निकालने के दिया जाए और शेष गो भक्त गो संत संकीर्तन करते हुए प्रार्थना करें और आगे की कार्य योजना पर कार्य करते रहें।



## इस प्रकार 3 महीने तक प्रार्थना पत्र के संविधित समूह (वैज्ञानिक, विधि विशेषज्ञ और विद्वान) सदकार से संवाद बनाये रखते हुए सदकार के संशयों को दूर कर समाधान पटक युक्ति बताए और सदकार से गो रक्षा, गो सेवा, गो सम्मान हेतु कानून बनाने की प्रार्थना जारी रखें।

“3 महीने तक शांतिपूर्ण, पूर्णतया सात्त्विक, अहिंसक तरीके से प्रार्थना और प्रतीक्षा करने पर भी सुनवाई ना हो, गो रक्षा, गो सेवा, गो सम्मान हेतु कानून बनाने में सरकार की रुचि दिखाई नहीं दें, तो फिर राज्य के सभी जिलों और तहसीलों के समस्त गो प्रेमी संतों, गोसेवी कार्यकर्ताओं, गो रक्षकों और गो भक्तों को लेकर अपनी-अपनी स्टेट कैपिटल (राज्य राजधानी) पहुंचे और राज्य स्तरीय सचिवालय के माध्यम से उपरोक्त चारों सक्षम महानुभावों से प्रार्थना करें, कि हम पिछले 120 दिनों से आपसे सविनय प्रार्थना कर रहे हैं, साथ ही शांति सहित, धैर्यपूर्वक आप द्वारा होने वाले सकारात्मक निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सभी यहीं चाह रहे हैं कि हमारी गो सुख विषयक बात सुनी जाए, राज्य/भारत वर्ष के संपूर्ण गौवंश को न्याय प्रदान किया जाए, परन्तु अब तक बात बनी नहीं है, भारतीय गोवंश हित कोई पूर्ण सकारात्मक निर्णय हुआ नहीं है, अब हम राज्य की राजधानी तक आ गए हैं। अब आप भारत के बहुसंख्यक राष्ट्र प्रेमी, गोवंश प्रेमी समाज की बात सुन लीजिए और आगामी गणतंत्र दिवस (26 जनवरी 2027) को राज्य स्तरीय आयोजन में तथा स्थान से माननीय राज्यपाल महोदय और केंद्रीय आयोजन में लाल किले की प्राचीर से गो रक्षापरक एक सुंदर सकारात्मक घोषणा राष्ट्र, संस्कृति और परंपरा हित करवा दीजिए कि अब देश की आजादी को 79 वर्ष बीत चुके हैं। स्वतंत्र भारत में लंबे समय से सनातन राष्ट्र प्रेमी समाज प्रतीक्षा कर रहा है कि राज्य/संपूर्ण भारत में गौहत्या समाप्त हो, उसके लिए हम स्पष्ट घोषणा करते हैं कि अब राज्य/भारत में गौहत्या नहीं होगी, गो हत्या करने वाले को फांसी के फंदे पर लटका दिया जाएगा और सम्पूर्ण गोवंश की सेवा हेतु चारा, गोबर, गोचर, गो दुग्ध, गो आधारित कृषि विषयक नीतियाँ बनाकर शीघ्र कार्य प्रारम्भ कर दिया जाएगा। ऐसा होने पर सारा राज्य/देश सदा आपका ऋणी रहेगा और युगों-युगों तक आपको याद किया जायेगा, ऐसी प्रार्थना प्रार्थनापत्र के माध्यम से सचिवालय में देकर आए।”



# सभी गो प्रेमी जन 3 महीने तक संकीर्तन करते हुए प्रतीक्षा करें।

3 महीने तक प्रार्थना पत्र के रचयिता समूह (वैज्ञानिक, विधि विशेषज्ञ और विद्वान) सरकार से संवाद बनाये रखते हुए सरकार के अधिकारियों, मंत्रियों के मन में गहराई से प्रवेश कर चुके संशयों को दूर कर समाधानपरक युक्ति सुझाएं और गोवंश हित विषयक प्रार्थना जारी रखें। इतना करने पर भी सरकार गो सेवा, गो रक्षा, गो सम्मान के विषय पर गंभीरता नहीं दिखाएं और 26 जनवरी 2027 तक भी गो हित में उचित निर्णय नहीं ले, तो फिर 5908 कार्यकर्ताओं सहित देश के सभी गोसेवक मिलकर एक महीने में राष्ट्र की राजधानी दिल्ली जाने की पूरी तैयारी करे और सरकार को स्पष्ट करें, कि शायद आप दूर से हमारी बात सुन नहीं पा रहे हैं, इसलिए अब हम आपके पास दिल्ली आकर ही अपने मन की गो विषयक पीड़ा करेंगे।

एक माह में पूरी तैयारी करके भारत के 780 जिलों में से अलग-अलग राज्यों के 30 जिलों से 1/1 हजार कार्यकर्ता प्रत्येक जिले से इकट्ठा होकर 7 दिन के लिए दिल्ली पहुंचेंगे और सात दिन दिल्ली में गो सम्मान आह्वान अभियान हेतु तथा प्रार्थना स्थल पर बैठेंगे। फिर 7 दिन बाद अन्य 30 ज़िलों से 30 हजार गो प्रेमी पहुँच जाएँगे और सात दिन पहले आए गो प्रेमी निकल जाएँगे। इस प्रकार अलग अलग जिलों से 7-7 दिन का समय निकालकर 30-30 जिले के लोग वहाँ पर बैठेंगे। ऐसी स्थिति में भारत में 780 जिले हैं, तो अपने देश भारत की राजधानी दिल्ली में साढ़े छः महीने तक लगातार 30 हजार गो प्रेमी बैठे रहेंगे। एक गो प्रेमी को दिन कितने देने हैं?

.....सिर्फ 7 और इधर 6:30 महीने तक लगातार ऐसी स्थिति

(तीस हजार लोग बैठे रहेंगे) बनी रहेगी।

अब अगला प्रश्न की वहाँ बैठकर तीस हजार गोभक्त करेंगे क्या?

# सिर्फ दो काम करने हैं...

एक संकीर्तन द्वारा भगवान से प्रार्थना और

दूसरा कागज कलम द्वारा सरकार को चिट्ठीयाँ लिखकर प्रार्थना।

चिट्ठी में गो सुख विषयक माँग लिखनी है कि गाय हमारी माँ है, हमारी परंपरा, हमारी कृषि, हमारी संस्कृति, हमारे अर्थ, हमारे आरोग्य, हमारे विषमुक्त सात्त्विक पोषण, हमारे अध्यात्म और हमारे जीवन का मूल आधार है। गोवंश के अतिरिक्त हमारे पास इन सब की प्राप्ति का और कोई सहज सुलभ साधन भी नहीं है। इस दृष्टि से गो सेवा, गो सुरक्षा, गो सम्मान हम बहुसंख्यक राष्ट्र प्रेमीयों का मौलिक अधिकार भी है। गो मांस भक्षियों के पास, न्यूट्रिशन और जीभ के स्वाद हेतु अन्य प्राकृतिक, अप्राकृतिक अन्य बहुत विकल्प हैं, इसलिए कृपा करके अति शीघ्र गोवंश सेवा, रक्षा और सम्मान का कानून बनाये। एक गो सेवक की लेखन क्षमता कितनी भी धीमी गति की हो (स्लो स्पीड हैंड राइटिंग कैपैसिटी हो) फिर भी वह 24 घंटे (एक दिन) में 10 चिट्ठी तो सरकार को लिख रही सकता है। 30,000 लोग 10/10 चिट्ठियां लिखे तो, एक दिन में 3 लाख चिट्ठियां लिखी जाएंगी। 6:30 महीने तक प्रतिदिन 3 लाख चिट्ठियां प्रधानमंत्री कार्यालय पहुंचाई जाएंगी।

**इतनी चिट्ठियां प्रधानमंत्री कार्यालय पहुंचेगी... क्या तब भी सरकार नहीं सुनेगी?**

**ऐसा विश्वास है कि सरकार निश्चित ही सुनेगी और गो हत्या पर प्रतिबंध लग जाएगा।**

गो सेवा, सुरक्षा को लेकर केंद्रीय नीति बन जाएगी,

गो माता को राष्ट्र माता का सम्मान मिल जायेगा,

गो सेवा का कार्य सुचारू रूप से प्रारम्भ हो जाएगा,

सम्पूर्ण भारत का गोचर कब्जे से मुक्त हो जाएगा,

गोचर का उपयोग सिर्फ गोवंश के लिए होगा,

चारा माफिया पर लगाम लगेगी,

गो आधारित कृषि को बढ़ावा मिलेगा,

गो उत्पादों का उपयोग बढ़ेगा,

पंचगव्य औषधीयों से उपचार को बल मिलेगा, जिससे पूरे विश्व का मंगल होगा।



एक प्रतिशत यह मान लें कि इतना सात्त्विक और शांतिपूर्ण तरीके से सतत् प्रयास करने पर भी 1 अगस्त 2027 तक सरकार इन गो सुख विषय कार्यों पर गंभीर नहीं हो और गो सुख विषय काम नहीं होता है, तो एक थोड़ा विशेष आत्मिक, आधिकारिक भाषा में पत्र लिखा जाएगा की 15 / 16 महीनों से हमने सतत् और शांतिपूर्ण तरीके से, अहिंसक तरीके से, राष्ट्र की निजी अथवा सार्वजनिक किसी भी प्रकार की किसी भी संपत्ति की एक सूई को भी नुकसान न पहुंचाकर, किसी को अभद्र भाषा ना बोलते हुए, किसी पर भी कोई विवादित टिप्पणी किए बिना, चुपचाप भगवान का भजन करते हुए आपसे गोसुख विषय प्रार्थना करते रहे, लेकिन 15 महीने निकल जाने के बाद भी आपने पता नहीं क्यों.... हमारी प्रार्थना को गंभीरता से नहीं लिया, कोई सुनवाई नहीं की।

**अतः अब हम आपको सीधा-सीधा विनयपूर्वक 13 दिन का समय देते हैं, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस आरहा है।**

15 अगस्त के दिन लाल किले की प्राचीर से अगर प्रधानमंत्री महोदय गौहत्या पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने की घोषणा करते हैं और हमारे द्वारा की गई गोरक्षा, गोसेवा और गो सम्मान विषयक प्रार्थना पर सकारात्मक रुख अपनाते हैं, तो हम अवतार की तरह प्रधानमंत्री जी की पूजा करेंगे और 15 अगस्त को उपरोक्त कार्य करने का स्पष्ट निर्णय प्रधानमंत्री जी के द्वारा दिए उद्घोषणा में नहीं आता है तो, हम समझ लेंगे कि भारत में अब गोहत्या बंद नहीं हो सकती हैं, गोसेवा और गो सम्मान विषयक कार्य नहीं होने वाला हैं और यह परम सत्य है कि गोवंश हमारे प्राण है, अगर हमारे प्राणों की ही नित्य हत्या होती रहे, तो फिर हम देह से जिंदा रह कर क्या करेंगे? इसलिए अगर 15 अगस्त 2027 तक भारत में गोहत्या बंद नहीं होती है और गोसेवा, गो सम्मान विषयक कार्य नहीं होता है, तो 16 अगस्त के दिन से हम लोग अन्न और अन्य आहार का त्यागकर (अनशन द्वारा) अपने प्राण त्याग देंगे और इसके लिए धर्म और संविधान दोनों की ओर से स्वीकृति भी है। अनशन करने से सरकार हमें रोक भी नहीं सकती है, यह हमारी तरफ से किया गया अंतिम उपाय है।

### अब प्रश्न यह खड़ा होता है कि अनशन कौन करेगा?

तो अनेकों गो भक्तों और गोप्रेमी संतों ने अनशन का संकल्प ले लिया है। यह स्पष्ट स्वीकृति देदी है कि जब भी अनशन की आवश्यकता पड़े, तो हमें याद किया जाए। हमें हमारे प्राणों की आहूति देनी पड़े, तो भी हम प्राणान्त तक अनशन हेतु तैयार हैं। कुछ के प्राण जाएँगे, जाएँगे, तब अन्य गो भक्त उनके स्थान पर अनशन हेतु बैठ जाएँगे। इस प्रकार अनेकों गो संत, गोसेवक आगे आते चले जायेंगे और यह अनशन का क्रम तब तक चलता रहेगा, जब तक भारत में गाय माता को सेवा सुरक्षा और सम्मान युक्त न्याय नहीं मिल जाता।

इस संपूर्ण अभियान में हमारी किसी से भी कोई व्यक्तिगत लड़ाई नहीं है, किसी का कोई विरोध नहीं है, गाय हमारी माता है और जब हमारी बात नहीं सुनी जाए, तो हम हमारे प्राण तो दे ही सकते हैं। हम किसी का कोई विरोध नहीं करेंगे, किसी को अपशब्द नहीं बोलेंगे, रेल की पटरीयाँ नहीं उखाड़ेंगे, थाने चौकीयाँ नहीं जलाएँगे, लेकिन हम प्रार्थना करेंगे और हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं होने पर अनशन द्वारा अपने प्राण त्याग देंगे।

और हमें विश्वास है कि प्राण देने की स्थिति आए, उसके पहले सरकार भी विचार करेगी ही करेगी। और इसके पीछे दो कारण हैं क्योंकि आगे चुनाव भी नजदीक आ रहा है तो सरकार को यह विचार करना पड़ेगा की 15 माह से भारत भर के गोप्रेमी भाई बहन गोहित हमसे प्रार्थना कर रहे हैं, 6 महीने से ये गोप्रेमी संत एवं भक्त दिल्ली में लगातार बैठे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं और अब अनशन की भी तैयारी चल रही है, अब यदि इनकी नहीं सुनी गई और गोवंश को सेवा, सुरक्षा और सम्मान का मौलिक अधिकार नहीं दिया गया, तो इसके परिणाम आगे सरकार के हित में नहीं होंगे।

यूँ भी सरकार को चुनाव के लिए कोई ना कोई उचित मुद्दा सनातनी  
समाज को जोड़े रखने देतु चाहिए।

इस समय भारतवर्ष में प्रमुख मुद्दों की बात करें तो केवल दो ही मुद्दे शेष बचे हैं....  
एक तो है हिंदू राष्ट्र और दूसरा गौहत्या पर प्रतिबंध

और यदि पहले हिंदू राष्ट्र बनाने की बात पर विचार किया जाए, तो बात  
बिना पति के सुहागिन जैसी हो जाएगी कि

एक लड़की है... गले में मंगलसूत्र है, मांग में सिंदूर है, लाल ओढ़नी भी ओढ़ी है, सुहाग का चूड़ा भी पहन रखा है, लेकिन उसका कोई पति नहीं है, तो फिर बिना पति की वह सुहागिन कैसी है? यदि गौहत्या भारत में बंद नहीं होती है और कोई कहे भारत हिंदू राष्ट्र हैं, तो यह मजाक से ज्यादा कुछ भी नहीं, क्योंकि सनातन का प्राण तो गोमाता ही हैं और जब गाय कटे और हम कहे कि हमारा भारत हिंदू राष्ट्र है तो यह मजाक नहीं तो और क्या होगा? इसलिए पहला मुद्दा तो गौमाता की रक्षा का ही शेष बचता है इसलिए जब हम लाखों सनातनी एक स्वर में भारत सरकार से सविनय प्रार्थना करेंगे कि अब तो गोवंश की हत्या पूर्णरूप से बंद हो जानी चाहिए, गो सेवा और गो सम्मान का कार्य हो ही जाना चाहिए, तो निश्चित सामूहिक प्रार्थना मान ली जाएगी।

## लेकिन इस अभियान में दो-चार अड़चनें आ सकती हैं।

1. नेतृत्व कौन करेगा ?
2. किस संगठन के बैनर तले यह काम होगा ?
3. चित्र किसका लगेगा ?
4. अध्यक्ष कौन होगा ?
5. प्रधान संरक्षक कौन होगा ?
6. उद्घोषकर्ता कौन होगे ?
7. धन की व्यवस्था कैसे होगी ?



उपरोक्त सभी बिंदुओं पर संतों और गोभक्तों ने मिलकर विचार किया कि पहले जितने आंदोलन हुए 1966, 2012, 2014, 2016, 2018, 2023 में वह सभी अभियान विभिन्न संगठनों के बैनर तले हुए और वह असफल हो गए क्योंकि उनमें संगठन के नाम थे, नेतृत्व करने वाले कार्यकर्ता का परिचय था, उनके नाम और चित्र का उपयोग किया जाता रहा है।

वर्तमान समय में मानव की प्रवृत्ति बन गई हैं कि एक कोई आगे बढ़ता है, तो दूसरा केकड़े की तरह उसकी टांग पकड़ के नीचे खींच लेता है, भले ही अच्छा कार्य हो रहा हो।

इसलिए संतों ने निर्णय लिया कि

इस बार कोई संस्था नहीं होगी,

कोई संगठन नहीं होगा,

कोई नेतृत्वकर्ता नहीं होगे,

कोई संत अगुवाई में नहीं होंगे,

कोई गोसेवक अथवा संत महापुरुष नेतृत्व नहीं करेंगे

इस अभियान के अध्यक्ष होंगे नंदी बाबा और  
प्रधान संरक्षक होगी भगवती गौमाता ।



गो माता और नंदी बाबा  
के अलावा किसी का नाम नहीं रहेगा,  
किसी का चिन्ह नहीं लगेगा,



किसी संस्था और संगठन के बैनर तत्त्व और व्यक्ति या संत के नेतृत्व में काम ना होकर, नंदी बाबा की अध्यक्षता और गो माता जी की प्रधान संरक्षता में कार्य होगा। शेष सभी भारतीय संत महापुरुष, गो सेवक भाई बहन धरातल पर अभियान विषयक काम निष्कामतापूर्व देखेंगे। तहसील, जिला, राज्य, दिल्ली और अनशन के इन पांचों क्रमिक स्थानों (प्रयासों) पर उद्घोथन हेतु कोई माइक नहीं रहेगा, कोई मंच नहीं होगा, किसी का कोई उद्घोथन नहीं होगा। मंच और माइक से सारा काम बिगड़ता है। परिणामस्वरूप अभियान की दिशा और दशा दोनों बदल जाती और हाथ लगती है तो सिफ्ऱ..... असफलता ।

एक प्रश्न और खड़ा होता है कि इतना बड़ा कार्य करेंगे, तो चंदा तो चाहिए। भोजन, प्रचार, प्रवास आदि में खर्च तो लगता ही है तो धन संग्रह किया जाए, परंतु संतो का मानना है कि जब-जब भी गौमाता के कार्य के लिए चंदा इकट्ठा करने की बात आती हैं, तो सैकड़ों लोग उठकर के खड़े हो जाते हैं कि यह तो धंधा कर रहे हैं, पैसा खा रहे हैं, गाय के नाम पर धन इक्कठा कर रहे हैं।

इसलिए संतों ने यह निर्णय लिया है कि यह अभियान भले ही राष्ट्रीय स्तर का है, परंतु वास्तविकता में यह आंदोलन नहीं यह प्रार्थना है और प्रार्थना में चंदे की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसलिए इस कार्य के लिए एक भी रुपया इकट्ठा नहीं किया जाएगा...फिर विचार किया यह कार्य कैसे होगा तो इस समस्या के निवारण के लिए दिल्ली के गोभक्तों ने ऐसा आश्वासन दिया है की 30,000 नहीं.. 50,000 लोग भी अगर वर्षभर के लिए वहाँ पर प्रार्थना करने के लिए एकत्रित होते हैं, तो उनके भोजन की व्यवस्था दिल्ली के गौभक्तों द्वारा घर-घर जाकर भोजन इक्कठा करके, अन्नक्षेत्र द्वारा, लंगर प्रसादी और भंडारों से की जाएगी।

108 प्रचारकों के मार्ग व्यय की व्यवस्था 108 गौभक्त संत एक-एक प्रचारक को गोद लेकर उनकी व्यवस्था करेंगे।  
प्रचार प्रसार हेतु पत्रक-होलिंग की व्यवस्था, सर्वाधित क्षेत्र के लोगों द्वारा जारी रहेगी।

संतों और गो भक्तों द्वारा कही गई यह सारी बातें हमें इतनी अच्छी लगी और अब हम 2 वर्ष तक उन संतों के मार्गदर्शन में अभियान की सफलता सुनिश्चित करने हेतु सेवा में लगे हैं।

आप भी एक-एक राज्य 8-8 जिला, 5 तहसील, 1 तहसील में कार्य करने की इच्छा रखते हैं, तो whatapp नंबर संपर्क करें या नीचे वर्णित बेब साइट पर जाकर अपना फ़ार्म भरे अथवा गो सम्मान आह्वान अभियान हेतु कार्य कर रहे अपने संपर्क वाले गो सेवक से बात करें, जो प्रचार हेतु पत्रक प्रिंट करवाना चाहे, वो नीचे लिखे नंबर पर बात कर मँगवा कर अथवा नीचे लिखी बेब साइट से पीडीएफ और CDR फ़ाइल डाउनलोड करके प्रेस से प्रिंट करवा ले और वितरण करवाए। ध्यान रहे पत्रक में किसी व्यक्ति, संस्था का नाम और सौजन्य में नहीं लिखना है।

पुनः आप सब से प्रार्थना है की आप गो सेवा, गो रक्षा और गो सम्मान हेतु हो रहे,

इस अभियान को सफल बनाने में अपना पूरा सहयोग प्रदान करें।





## संपर्क और जुड़ाव



गो सेवा और गो रक्षा के माध्यम से होने वाले राष्ट्र रक्षा एवं संस्कृति रक्षा के इस निष्काम और पवित्र अभियान में सम्मिलित होने के लिए

- (1) Whatsapp No. 8239711008 पर अपनी विस्तृत जानकारी भेजें
- (2) <https://www.gausamman.cloud> वेबसाइट पर ऑनलाइन फॉर्म भरें।
- (3) अधिक जानकारी के लिए नंबर पर सम्पर्क करें।

इस अभियान में प्रचार – प्रसार में सहयोग हेतु आप प्रचारक बनकर समय दान कर सकते हैं अथवा अभियान की वेबसाइट से प्रचार पत्रक की PDF और CDR फाइल डाउनलोड कर पत्रक प्रिंट करवा कर वितरित कर सकते हैं। ध्यान रहें... इसमें सौजन्य से, अपना नाम, अपनी संस्था का नाम, अपने संगठन का नाम लिखे बिना यथारूप पर्चा छपवाकर अपने क्षेत्र में स्वयं वितरित करें अथवा अपने क्षेत्र में कार्यरत प्रचारक को पत्रक प्रदान कर गौसेवा में सहयोग कर सकते हैं। सीडीआरया पीडीएफ फाइल प्राप्त करने हेतु ऊपर लिखे व्हाट्सएप नंबर पर भी मेसेज कर सकते हैं।



## NO DONATIONS

इस अभियान हेतु किसी भी प्रकार का दान चंदा स्वीकार नहीं किया जा रहा है। अगर कोई इस अभियान के नाम से दान चंदा मांगे, तो **8239711008** नंबर पर शिकायत करें।

अधिक जानकारी हेतु अभियान की वेबसाइट पर विजिट करें

## https://www.gausamman.cloud

अभियान के फेसबुक, यूट्यूब, इन्स्टा, व्हाट्सअप और अन्य सोशल मीडिया अकाउंट के लिए QR कोड स्कैन करें



<https://www.gausamman.cloud/socialmedia>